जन्मदिवस (29 मार्च) के अवसर पर

युवा इटली

• मक्सिम गोर्की

मखमली कपड़े पहने हुए रात दबे पाँव मैदान से नगर में प्रवेश कर रही है। नगर सुनहरी, जगमगाती बत्तियों से उसका स्वागत कर रहा है। दो नारियाँ और एक युवक भी मानो रात का अभिनन्दन करते हुए मैदान में चले जा रहे हैं। उनके पीछे-पीछे दिन भर की दौड़-धूप से थका-हारा हुआ ज़िन्दगी का धीमा-धीमा शोर सुनाई दे रहा है।

रोम के अनेक कबीलों के गुलामों द्वारा बनाई गई प्राचीन सड़क की काली-काली टाइलों पर तीन व्यक्तियों के पैरों की धीमी-धीमी आहट सुनाई दे रही है। प्यारी ख़ामोशी में एक नारी की स्नेहमयी और दृढ़ आवाज़ सुनाई देती है :

"लोगों के साथ तुम्हें कड़ाई से पेश आना चाहिए..."

"क्या तुमने मुझमें कभी कोई ऐसी बात देखी है, माँ?" युवक ने पूछा।

"तुम बहुत ही जोश से बहस करते हो..."

युवक के बाईं ओर पत्थरों पर खड़ाउओं को घसीटती और सिर को ऊपर उठाकर आकाश को ऐसे ताकती हुई, मानो अंधी हो, एक युवती चल रही है। आकाश में सन्ध्या का बड़ा-सा सितारा चमक रहा है, उसके नीचे डूबते सूरज की हलकी-सी लाल धारी है और इस लाली की पृष्ठभूमि में चिनार के दो पेड़ बिना जली मशालों जैसे लग रहे हैं।

"समाजवादियों को अक्सर जेलों में बन्द कर दिया जाता है" माँ ने आह भर कर कहा।

"हमेशा ऐसा ही नहीं होगा। आख़िर इससे कोई फ़ायदा तो होता नहीं..." बेटे ने शान्तिपूर्वक जवाब दिया।

"सो तो ठीक है, लेकिन फ़िलहाल..."

"न तो ऐसी ताक़त आज है और न कभी होगी जो दुनिया के जवान दिल को कुचल सके..."

"गीत के लिए ये शब्द बड़े सुन्दर हैं, मेरे बेटे..."

"लाखों-करोड़ों कण्ठ इस गीत को गाते हैं और पूरी दुनिया ही अधिकाधिक ध्यान से इसे सुन रही है...ज़रा याद करके बताओ– क्या तुम भी पहले कभी इतने धीरज और प्यार से मेरी या पाओलो की बातें सुनती थीं?"

"यह ठीक है। लेकिन...हड़ताल ने तुम्हें अपना जन्म नगर छोड़ने को मजबूर कर दिया न..."

"दो के लिए वह काफ़ी बड़ा नहीं। अच्छा है कि पाओलो ही यहाँ रहे। लेकिन हड़ताल तो हमने जीत ली..."

"जीत ली," युवती ने ज़ोर देकर कहा, "तुमने और पाओलो ने..."

अपनी बात अधूरी छोड़कर वह धीरे से हँस दी और फिर क्षण भर को तीनों चुपचाप चलते रहे। अन्धेरे में एक टीला-सा उभरकर सामने आ गया। वास्तव में, वह किसी इमारत के खण्डहरों का ढेर था। उसके ऊपर सफेदे के पेड़ की पतली-पतली शाखाएँ विचारमग्न-सी लटकी थीं। ये तीनों जब पेड़ के करीब पहुँचे तो उसकी शाखाएँ मानो धीरे-से सिहरीं।

"लो–वह रहा पाओलो," युवती ने कहा।

लम्बे कद की काली-सी आकृति खण्डहरों में से निकलकर सड़क के बीच आ खड़ी हुई।

"मन की आँखों से देख लिया था क्या?" युवक ने हँसते हुए पूछा।

सामने से भारी आवाज़ गूँजी :

"तो जा रहे हो?"

"हाँ। और ये रही—मेरी माँ तथा बहन जिनकी तुम्हें देखभाल करनी होगी। तुम लोग अब मेरे साथ आगे नहीं चलो, इसकी ज़रूरत नहीं है। रोम तक पहुँचने में मुझे सिर्फ़ पाँच घण्टे लगेंगे और मैं जान-बूझकर पैदल जा रहा हूँ, ताकि रास्ते में कुछ सोच-विचार कर सकूँ..."

सब रुक गये... लम्बे कद वाले ने अपना टोप उतार लिया और तनिक आर्द्र आवाज़ में कहा :

"माँ और बहन के बारे में तुम्हें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं—इन्हें कोई कष्ट नहीं होगा!"

"मैं जानता हूँ। विदा, माँ!"

माँ धीमे-से सिसकी और कराही, इसके बाद तीन ज़ोरदार चुम्बन और मर्दाना आवाज़ में ये शब्द सुनाई दिये :

"घर जाकर चैन से आराम करो। इन तूफ़ानी दिनों में काफ़ी चिन्ता कर चुकीं! जाओ, परेशान होने की कोई बात नहीं! पाओलो भी तो तुम्हारे लिए मेरे जैसा ही बेटा है! तो प्यारी बहन, अब तुमसे भी..."

फिर से चुम्बन और पत्थरों पर पैरों की खरखरी आहट सुनाई दी। रात की सधी-बँधी नीरवता सारी ध्वनियों को दर्पण की भाँति प्रतिबिम्बित कर रही थी।

अन्धेरे की चादर में लिपटी हुई चार आकृतियाँ एक-दूसरे में सिमटकर एक बड़ा शरीर बन गयीं और देर तक अलग नहीं हो पायीं। आख़िर चुपचाप अलग हुईं—तीन आकृतियाँ धीरे-धीरे नगर की बत्तियों की ओर चल दीं और एक आकृति तेज़ी से कदम उठाती हुई आगे, पश्चिम की ओर बढ़ चली जहाँ संध्या की लाली लुप्त हो चुकी थी और नीले आकाश में अनेकानेक उज्ज्वल सितारे जगमगा उठे थे।

दूरी से आशा पैदा करती हुई यह आवाज़ आयी :

"विदा! उदास नहीं होना, जल्द ही मिलेंगे..."

लकड़ी की खड़ाऊँ ठक-ठक की आवाज़ करते हुए बज रही थी, खरखरी आवाज़ वाले ने तसल्ली देते हुए ये शब्द कहे

"उसके साथ सबकुछ ठीक-ठाक रहेगा, दोन्ना फिलोमेना। मेरी इस बात पर आप वैसे ही विश्वास कर सकती हैं जैसे अपनी मदोन्ना की कृपा पर। उसके पास अच्छा दिमाग़ और मज़बूत दिल है, वह खुद प्यार करना जानता है और आसानी से दूसरों को अपने से प्यार करने को विवश कर सकता है...और लोगों के प्रति प्यार ही तो वे पंख हैं जो आदमी को सबसे अधिक ऊँचाई पर पहुँचा देते हैं..."

नगर अन्धेरे में अपनी छोटी-छोटी और मन्द रोशनी वाली बत्तियों को बढ़ाता जा रहा था और लम्बे कद के व्यक्ति के शब्द भी रोशनियों की तरह ही चमकते थे।

"यह किसी व्यक्ति के हृदय में दुनिया को एकजुट करने वाले शब्द होते हैं तो उसे हर जगह उसका ऊँचा मूल्य आँकने वाले लोग भी मिल जाते हैं—हर जगह ही!"

नगर की रक्षा दीवार से सटा हुआ एक छोटा-सा सफ़ेद भटियारखाना अपने रोशन दरवाज़े की चौकोर आँखों से लोगों को मानो अपनी ओर खींच रहा था। दरवाज़े के निकट ही छोटी-छोटी तीन मेज़ों पर काली-काली आकृतियाँ हो-हल्ला मचा रही थीं, गिटार के तारों के दर्द भरे स्वर निकल रहे थे, मैण्डोलिन की काँपती-सिहरती ध्वनियाँ गूँज रही थीं।

ये तीनों प्राणी जब दरवाज़े के निकट पहुँचे तो संगीत बन्द हो गया, आवाज़ें धीमीं हो गयीं और उनमें से कुछ लोग उठकर खड़े हो गये...

"नमस्ते साथियो!" लम्बे कद वाले ने कहा।

और कोई दसेक आवाज़ों ने खुशी तथा हार्दिकता से जवाब दिया :

"नमस्ते, साथी पाओलो! हमारे पास आये हैं? शराब का एकाध जाम?"

"नहीं...धन्यवाद!"

माँ ने गहरी साँस लेकर कहा :

"हमारे सभी लोग तुम्हें भी बेहद प्यार करते हैं..."

"हमारे सभी लोग, यही कहा है न आपने, दोन्ना फिलोमेना?"

"ऐ, मेरी बात की हँसी नहीं उड़ाओ...अपनी जनता से मैं अपरिचित-अजनबी नहीं हूँ...तुमको और उसको सभी प्यार करते हैं..."

लम्बे नौजवान ने युवती का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा:

"सभी और एक यह भी...ठीक है न?"

"हाँ", युवती ने धीमे से कहा। "बेशक ठीक है..."

माँ तनिक हँस दी:

"ओह, मेरे बच्चों!...जब तुम्हारी बातें सुनती हूँ और तुम लोगों को देखती हूँ तो यह यक़ीन हो जाता है कि तुम लोगों की ज़िन्दगी हमसे बेहतर होगी..."

और तीनों पास ही में नगर की सड़क पर आँखों से ओझल हो गये जो पुरानी और घिसी-फटी पोशाक की आस्तीन की तरह तंग और खस्ताहाल थी...

भगतसिंह ने कहा

"हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह युद्ध तब तक चलता रहेगा, जब तक कि शक्तिशाली व्यक्ति भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार जमाए रखेंगे। चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज पूँजीपति, अंग्रेज शासक या सर्वथा भारतीय ही हों। उन्होंने आपस में मिलकर एक लूट जारी कर रखी है। यदि शुद्ध भारतीय पूँजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो तब भी इस स्थिति में कोई अंतर नहीं पड़ता।"

(फाँसी से तीन दिन पूर्व भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव द्वारा फाँसी की बजाय गोली से उड़ाए जाने की माँग करते हुए पंजाब के गवर्नर को लिखे गए पत्र का एक अंश।)